



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

ANWESHA ROY

15/12/1981 6:0 AM

Mumbai, Maharashtra India

প্রাথমিক বিবরণ

প্রাথমিক বিবরণ

জন্ম তারিখ	15/12/1981
জন্মের সময়	6:0
জন্মস্থান	Mumbai,Maharashtra India
অক্ষাংশ	25 N 19
দৈর্ঘ্য	82 E 20
সময় মন্ডল	5.5
আয়নাংশ	23:36:17
সূর্যোদয়	06:38:26
সূর্যাস্ত	17:12:52

ঘাট চক্র

মাস	পৌষ
তিথি	2,7,12
দিন	বুধবার
নক্ষত্র	অনুরাধা
যোগ	ব্যাঘাত
করণ	নাগ
প্রহর	1
চন্দ্র	12

পঞ্জিকা বিবরণ

তিথি	কৃষ্ণ পঞ্চমী
যোগ	বৈধৃতি
নক্ষত্র	অশ্লেষা
করণ	কৌলব

জ্যোতিষ বিবরণ

বর্ষ	বিধ
ভাষ্য	জলচর
কোষ	মার্জার
গণ	রাক্ষস
নাড়ি	অন্ত
রাশি	কর্কট
রাশি স্বামী	চন্দ্র
নক্ষত্র	অশ্লেষা
নক্ষত্র স্বামী	বুধ
চরণ	1
যুগ	মধ্য
তত্ত্ব	জল
নাম বর্ণমালা	দী
পায়	রূপা
লগ্ন	বৃশ্চিক
লগ্ন স্বামী	মঙ্গল

গ্রহের অবস্থান

গ্রহ	বক্র	রাশি	অংশ	রাশি স্বামী	নক্ষত্র	নক্ষত্র স্বামী	ঘর
সূর্য		বৃশ্চিক	29:20:39	মঙ্গল	জ্যেষ্ঠা	বুধ	1
চন্দ্র		কর্কট	19:41:21	চন্দ্র	অশ্লেষা	বুধ	9
মঙ্গল		কন্যা	05:55:57	বুধ	উত্তরা ফাল্গুনী	সূর্য	11
বুধ		ধনু	01:47:54	বৃহস্পতি	মূল	কেতু	2
বৃহস্পতি		তুলা	09:44:30	শুক্র	স্বাতী	রাহু	12
শুক্র		মকর	10:14:06	শনি	শ্রাবণ	চন্দ্র	3
শনি		কন্যা	26:44:48	বুধ	চিত্রা	মঙ্গল	11
রাহু	R	কর্কট	00:28:59	চন্দ্র	পুনর্বসু	বৃহস্পতি	9
কেতু	R	মকর	00:28:59	শনি	উত্তরা সাধ	সূর্য	3
লগ্নপতি গ্রহ		বৃশ্চিক	19:56:53	মঙ্গল	জ্যেষ্ঠা	বুধ	1



সূর্য
বৃশ্চিক
জ্যেষ্ঠা

কারক



চন্দ্র
কর্কট
অশ্লেষা

যোগ-কারক



মঙ্গল
কন্যা
উত্তরা ফাল্গুনী

নিরপেক্ষ



বুধ
ধনু
মূল

ক্ষতিকারক



বৃহস্পতি
তুলা
স্বাতী

কারক



শুক্র
মকর
শ্রাবণ

ক্ষতিকারক



শনি
কন্যা
চিত্রা

নিরপেক্ষ



রাহু
কর্কট
পুনর্বসু

--



কেতু
মকর
উত্তরা সাধ

--

জন্মপত্রিকা কুন্ডলি

লগ্ন কুন্ডলি

চ	রা	শু
ম	বু	সূ
		ASC

কোনো ব্যক্তির জন্মের সময়ে পূর্ব দিগন্তে উদিত রাশি কে সেই ব্যক্তির লগ্ন বলা হয়। কুন্ডলি তে ১২ টি ঘর হয়, তার মধ্যে প্রথম ঘরই লগ্নের ঘর। এই লগ্নের ঘর টি বাকি ঘরের থেকে গুরুত্বপূর্ণ হয়। লগ্নের উপর নির্ভর করে ব্যক্তির আগ্রহ, রুচি, এবং স্বভাব চরিত্র।

চ		শু
রা	ASC	বু
ম	বু	সূ

চন্দ্র কুন্ডলি

	বু	শু
রা		সূ
ম	চ	বু
শ		ASC

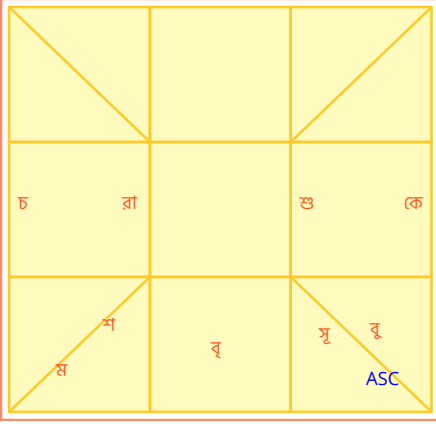
নবাংশ কুন্ডলি

নবাংশ কুন্ডলি কে ৯ ভাগে ভাগ করা হয় যার উপর নির্ভর করে জন্মকুন্ডলীর বিবেচনা করা হয়। এই কুন্ডলি তে যদি গ্রহের অবস্থান ভালো হয় বা উত্তম হয় তাহলে বর্গত্তম পর্যা তৈরি হয়। আর ব্যক্তির শারীরিক বা মানসিক উন্নতি হয়ে থাকে।

লগ্ন কুন্ডলীর পর যে রাশি তে চাঁদের প্রতিষ্ঠান হয় সেই রাশি কে লগ্ন মনে করে আরো একটি কুন্ডলীর উৎপত্তি হয় যাকে চন্দ্রকুন্ডলী বলে। জ্যোতিষ শাস্ত্রে চন্দ্রকুন্ডলীর মাহাত্ম লগ্নকুন্ডলীর সমান ধরা হয়।

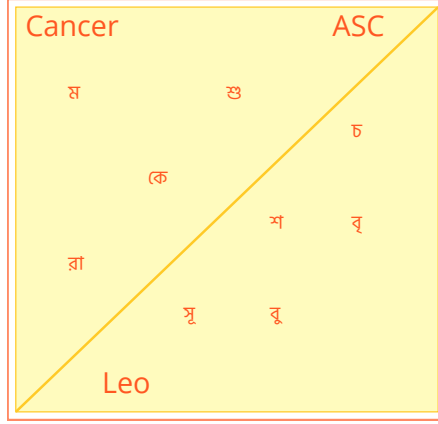
বিভাগীয় কুন্ডলি

সূর্য কুন্ডলি



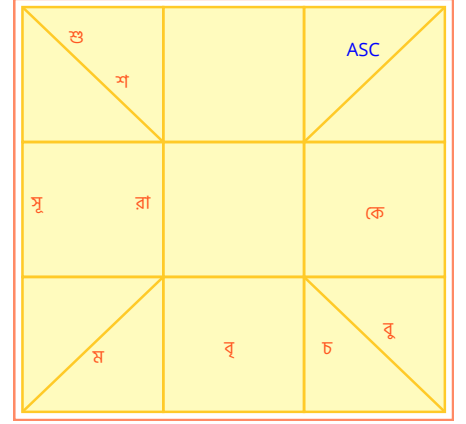
স্বাস্থ্য, গঠন, শরীর

হোরা কুন্ডলি



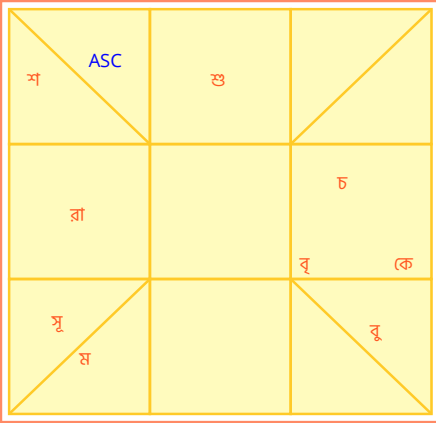
অর্থ, সম্পদ, সমৃদ্ধি

দশকান কুন্ডলি



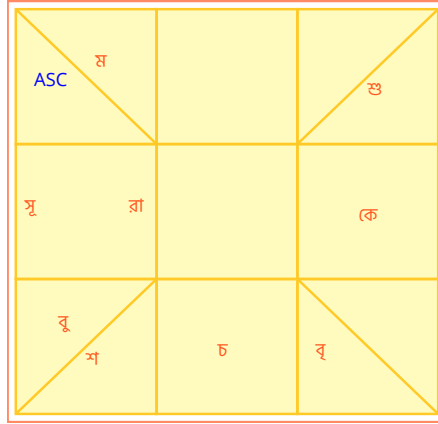
ভাই, বোন

চতুর্থাংশ কুন্ডলি



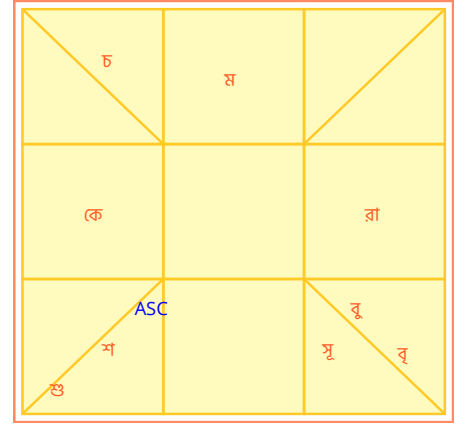
ভাগ্য, জাতকের ভাগ্য

পঞ্চমাংশ কুন্ডলি



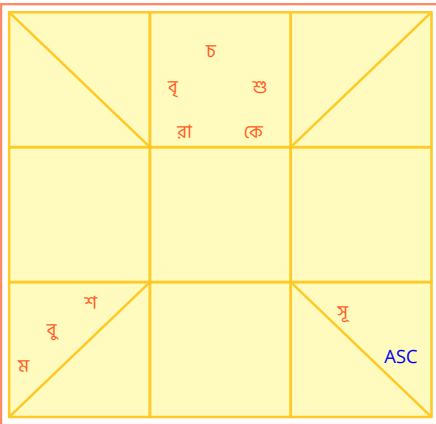
অধ্যাত্মবাদ

সপ্তমাংশ কুন্ডলি



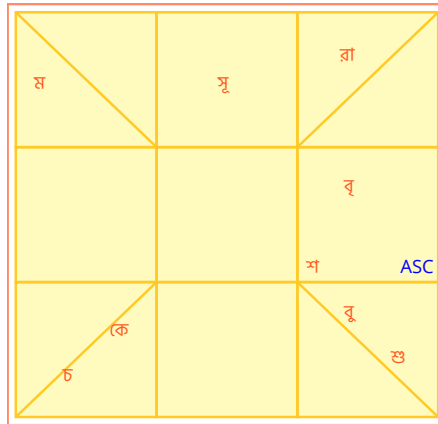
গর্ভধারণ, সন্তানের জন্ম

অষ্টমাংশ কুন্ডলি



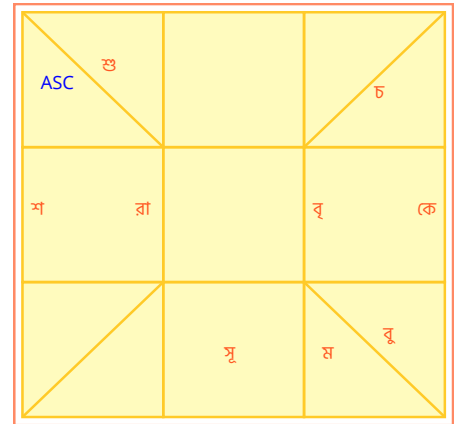
দীর্ঘায়ু

দশমাংশ কুন্ডলি



জীবিকা, পেশা

দ্বাদশ কুন্ডলি



মাতাপিতা, পৈতৃক সুখ

ভাব সন্ধি

লগ্ন - 19:56:53 দশমভাবমধ্য - 29:14:28

ঘর	রাশি	ভাব মাধ্যম	রাশি	ভাব সন্ধি
1	বৃশ্চিক	19:56:53	ধনু	06:29:49
2	ধনু	23:02:45	মকর	09:35:40
3	মকর	26:08:36	কুম্ভরাশি	12:41:32
4	কুম্ভরাশি	29:14:28	মীনরাশি	12:41:32
5	মীনরাশি	26:08:36	মেঘ	09:35:40
6	মেঘ	23:02:45	বৃষ	06:29:49
7	বৃষ	19:56:53	মিথুন	06:29:49
8	মিথুন	23:02:45	কর্কট	09:35:40
9	কর্কট	26:08:36	সিংহ	12:41:32
10	সিংহ	29:14:28	কন্যা	12:41:32
11	কন্যা	26:08:36	তুলা	09:35:40
12	তুলা	23:02:45	বৃশ্চিক	06:29:49

চালিত কুন্ডলি

রা		
চ		শু
ম	ব	সূ কে বু ASC

ছকের মধ্যে ঘরের কাল্পনিক সীমানা কে ভাব সন্ধি বলে আর রাশির সীমানা কে রাশি সন্ধি বলে। সন্ধি হলো কোনো ঘরের সব চেয়ে গুরুত্বপূর্ণ ও ক্ষমতামূলক জায়গা। এই সন্ধি তে যে গ্রহ অবস্থান করে তারই সবচেয়ে বেশি প্রভাব হয়।

বিংশোত্তরি দশা - I

বুধ

6-2-1978 14:11

6-2-1995 20:11

কেতু

6-2-1995 20:11

6-2-2002 14:11

শুক্র

6-2-2002 14:11

6-2-2022 14:11

বুধ 5-7-1980 5:38

কেতু 2-7-1981 10:35

শুক্র 2-5-1984 7:35

সূর্য 8-3-1985 18:41

চন্দ্র 8-8-1986 5:11

মঙ্গল 5-8-1987 10:8

রাহু 21-2-1990 19:26

বৃহস্পতি 29-5-1992 17:2

শনি 6-2-1995 20:11

কেতু 5-7-1995 23:38

শুক্র 4-9-1996 2:38

সূর্য 9-1-1997 22:44

চন্দ্র 11-8-1997 0:14

মঙ্গল 7-1-1998 3:41

রাহু 25-1-1999 15:59

বৃহস্পতি 1-1-2000 13:35

শনি 9-2-2001 9:14

বুধ 6-2-2002 14:11

শুক্র 8-6-2005 2:11

সূর্য 8-6-2006 8:11

চন্দ্র 7-2-2008 2:11

মঙ্গল 8-4-2009 5:11

রাহু 7-4-2012 23:11

বৃহস্পতি 7-12-2014 23:11

শনি 6-2-2018 14:11

বুধ 7-12-2020 11:11

কেতু 6-2-2022 14:11

সূর্য

6-2-2022 14:11

7-2-2028 2:11

চন্দ্র

7-2-2028 2:11

6-2-2038 14:11

মঙ্গল

6-2-2038 14:11

6-2-2045 8:11

সূর্য 27-5-2022 3:59

চন্দ্র 25-11-2022 18:59

মঙ্গল 2-4-2023 15:5

রাহু 25-2-2024 8:29

বৃহস্পতি 13-12-2024 13:17

শনি 25-11-2025 12:59

বুধ 2-10-2026 0:5

কেতু 6-2-2027 20:11

শুক্র 7-2-2028 2:11

চন্দ্র 7-12-2028 11:11

মঙ্গল 8-7-2029 12:41

রাহু 7-1-2031 9:41

বৃহস্পতি 8-5-2032 9:41

শনি 7-12-2033 17:11

বুধ 9-5-2035 3:41

কেতু 8-12-2035 5:11

শুক্র 7-8-2037 23:11

সূর্য 6-2-2038 14:11

মঙ্গল 5-7-2038 17:38

রাহু 24-7-2039 5:56

বৃহস্পতি 29-6-2040 3:32

শনি 7-8-2041 23:11

বুধ 5-8-2042 4:8

কেতু 1-1-2043 7:35

শুক্র 2-3-2044 10:35

সূর্য 8-7-2044 6:41

চন্দ্র 6-2-2045 8:11

বিংশোত্তরি দশা - II

রাহু		বৃহস্পতি		শনি	
6-2-2045 8:11		6-2-2063 20:11		6-2-2079 20:11	
6-2-2063 20:11		6-2-2079 20:11		6-2-2098 14:11	
রাহু	20-10-2047 12:23	বৃহস্পতি	27-3-2065 0:59	শনি	9-2-2082 15:14
বৃহস্পতি	15-3-2050 2:47	শনি	8-10-2067 8:11	বুধ	19-10-2084 18:23
শনি	19-1-2053 1:53	বুধ	13-1-2070 5:47	কেতু	28-11-2085 14:2
বুধ	8-8-2055 11:11	কেতু	20-12-2070 3:23	শুক্র	28-1-2089 5:2
কেতু	25-8-2056 23:29	শুক্র	20-8-2073 3:23	সূর্য	10-1-2090 4:44
শুক্র	26-8-2059 17:29	সূর্য	8-6-2074 8:11	চন্দ্র	11-8-2091 12:14
সূর্য	20-7-2060 10:53	চন্দ্র	8-10-2075 8:11	মঙ্গল	19-9-2092 7:53
চন্দ্র	19-1-2062 7:53	মঙ্গল	13-9-2076 5:47	রাহু	27-7-2095 6:59
মঙ্গল	6-2-2063 20:11	রাহু	6-2-2079 20:11	বৃহস্পতি	6-2-2098 14:11

বর্তমান চলতি দশা

দশার নাম	গ্রহ	শুরুর তারিখ	শেষ তারিখ
মহাদশা	শুক্র	6-2-2002 14:11	6-2-2022 14:11
অন্তর্দশা	শনি	7-12-2014 23:11	6-2-2018 14:11
প্রত্যান্তর দশা	রাহু	15-3-2017 21:8	5-9-2017 8:59
সূক্ষ্ম দশা	বৃহস্পতি	10-4-2017 21:43	4-5-2017 0:54

* মন্তব্য: সকল তারিখ দশার শেষ তারিখ ইঙ্গিত করছে

যোগিনী দশা - I

ভ্রামরী (4 বছর)

18-1-1981 8:52
18-1-1985 8:52

ভদ্রিকা (5 বছর)

18-1-1985 8:52
18-1-1990 8:52

উল্কা (6 বছর)

18-1-1990 8:52
18-1-1996 8:52

ভ্রামরী 29-6-1981 16:52

ভদ্রিকা 18-1-1982 14:52

উল্কা 19-9-1982 2:52

সিদ্ধা 30-6-1983 4:52

সংকট 19-5-1984 20:52

মঙলা 29-6-1984 10:52

পিজলা 18-9-1984 14:52

ধন্য 18-1-1985 8:52

ভদ্রিকা 29-9-1985 0:22

উল্কা 30-7-1986 9:22

সিদ্ধা 20-7-1987 11:52

সংকট 29-8-1988 7:52

মঙলা 19-10-1988 1:22

পিজলা 28-1-1989 12:22

ধন্য 29-6-1989 16:52

ভ্রামরী 18-1-1990 8:52

উল্কা 18-1-1991 14:52

সিদ্ধা 19-3-1992 17:52

সংকট 19-7-1993 17:52

মঙলা 18-9-1993 14:52

পিজলা 18-1-1994 8:52

ধন্য 19-7-1994 23:52

ভ্রামরী 20-3-1995 11:52

ভদ্রিকা 18-1-1996 8:52

সিদ্ধা (7 বছর)

18-1-1996 8:52
18-1-2003 8:52

সংকট (8 বছর)

18-1-2003 8:52
18-1-2011 8:52

মঙলা (1 বছর)

18-1-2011 8:52
18-1-2012 8:52

সিদ্ধা 29-5-1997 12:22

সংকট 18-12-1998 16:22

মঙলা 27-2-1999 16:52

পিজলা 19-7-1999 17:52

ধন্য 17-2-2000 19:22

ভ্রামরী 27-11-2000 21:22

ভদ্রিকা 17-11-2001 23:52

উল্কা 18-1-2003 8:52

সংকট 28-10-2004 16:52

মঙলা 17-1-2005 20:52

পিজলা 29-6-2005 4:52

ধন্য 27-2-2006 16:52

ভ্রামরী 18-1-2007 8:52

ভদ্রিকা 28-2-2008 4:52

উল্কা 29-6-2009 4:52

সিদ্ধা 18-1-2011 8:52

মঙলা 28-1-2011 12:22

পিজলা 17-2-2011 19:22

ধন্য 20-3-2011 5:52

ভ্রামরী 29-4-2011 19:52

ভদ্রিকা 19-6-2011 13:22

উল্কা 19-8-2011 10:22

সিদ্ধা 29-10-2011 10:52

সংকট 18-1-2012 8:52

যোগিনী দশা - II

পিজলা (2 বছর)

18-1-2012 8:52
18-1-2014 8:52

ধন্য (3 বছর)

18-1-2014 8:52
18-1-2017 8:52

ভ্রামরী (4 বছর)

18-1-2017 8:52
18-1-2021 8:52

পিজলা 27-2-2012 22:52

ধন্য 28-4-2012 19:52

ভ্রামরী 18-7-2012 23:52

ভদ্রিকা 28-10-2012 10:52

উল্কা 27-2-2013 4:52

সিদ্ধা 19-7-2013 5:52

সংকট 28-12-2013 13:52

মঙলা 18-1-2014 8:52

ধন্য 19-4-2014 16:22

ভ্রামরী 19-8-2014 10:22

ভদ্রিকা 18-1-2015 14:52

উল্কা 20-7-2015 5:52

সিদ্ধা 18-2-2016 7:22

সংকট 18-10-2016 19:22

মঙলা 18-11-2016 5:52

পিজলা 18-1-2017 8:52

ভ্রামরী 29-6-2017 16:52

ভদ্রিকা 18-1-2018 14:52

উল্কা 19-9-2018 2:52

সিদ্ধা 30-6-2019 4:52

সংকট 19-5-2020 20:52

মঙলা 29-6-2020 10:52

পিজলা 18-9-2020 14:52

ধন্য 18-1-2021 8:52

ভদ্রিকা (5 বছর)

18-1-2021 8:52
18-1-2026 8:52

উল্কা (6 বছর)

18-1-2026 8:52
18-1-2032 8:52

সিদ্ধা (7 বছর)

18-1-2032 8:52
18-1-2039 8:52

ভদ্রিকা 29-9-2021 0:22

উল্কা 30-7-2022 9:22

সিদ্ধা 20-7-2023 11:52

সংকট 29-8-2024 7:52

মঙলা 19-10-2024 1:22

পিজলা 28-1-2025 12:22

ধন্য 29-6-2025 16:52

ভ্রামরী 18-1-2026 8:52

উল্কা 18-1-2027 14:52

সিদ্ধা 19-3-2028 17:52

সংকট 19-7-2029 17:52

মঙলা 18-9-2029 14:52

পিজলা 18-1-2030 8:52

ধন্য 19-7-2030 23:52

ভ্রামরী 20-3-2031 11:52

ভদ্রিকা 18-1-2032 8:52

সিদ্ধা 29-5-2033 12:22

সংকট 18-12-2034 16:22

মঙলা 27-2-2035 16:52

পিজলা 19-7-2035 17:52

ধন্য 17-2-2036 19:22

ভ্রামরী 27-11-2036 21:22

ভদ্রিকা 17-11-2037 23:52

উল্কা 18-1-2039 8:52

যোগিনী দশা - III

সংকট (৪ বছর)

18-1-2039 8:52
18-1-2047 8:52

মঙলা (১ বছর)

18-1-2047 8:52
18-1-2048 8:52

পিঙ্গলা (২ বছর)

18-1-2048 8:52
18-1-2050 8:52

সংকট 28-10-2040 16:52

মঙলা 17-1-2041 20:52

পিঙ্গলা 29-6-2041 4:52

ধন্য 27-2-2042 16:52

ভ্রামরী 18-1-2043 8:52

ভদ্রিকা 28-2-2044 4:52

উল্লা 29-6-2045 4:52

সিদ্ধা 18-1-2047 8:52

মঙলা 28-1-2047 12:22

পিঙ্গলা 17-2-2047 19:22

ধন্য 20-3-2047 5:52

ভ্রামরী 29-4-2047 19:52

ভদ্রিকা 19-6-2047 13:22

উল্লা 19-8-2047 10:22

সিদ্ধা 29-10-2047 10:52

সংকট 18-1-2048 8:52

পিঙ্গলা 27-2-2048 22:52

ধন্য 28-4-2048 19:52

ভ্রামরী 18-7-2048 23:52

ভদ্রিকা 28-10-2048 10:52

উল্লা 27-2-2049 4:52

সিদ্ধা 19-7-2049 5:52

সংকট 28-12-2049 13:52

মঙলা 18-1-2050 8:52

ধন্য (৩ বছর)

18-1-2050 8:52
18-1-2053 8:52

* মন্তব্য: সকল তারিখ দশার
শেষ তারিখ ইঙ্গিত করছে

ধন্য 19-4-2050 16:22

ভ্রামরী 19-8-2050 10:22

ভদ্রিকা 18-1-2051 14:52

উল্লা 20-7-2051 5:52

সিদ্ধা 18-2-2052 7:22

সংকট 18-10-2052 19:22

মঙলা 18-11-2052 5:52

পিঙ্গলা 18-1-2053 8:52

শুভ লক্ষণ

1

ভাগ্য অঙ্ক

6

মৌলিক অঙ্ক

6

নাম অঙ্ক

আপনার নাম	Anwesha Roy
জন্ম তারিখ	15-12-1981
মৌলিক অঙ্ক	6
মৌলিক শাসক	শুক্র
বন্ধুত্বপূর্ণ অঙ্ক	4,3,9
নিরপেক্ষ অঙ্ক	2,5,7
ক্ষতিকারক অঙ্ক	1,8
শুভ দিন	বৃহস্পতিবার, মঙ্গলবার, শুক্রবার
শুভ রত্ন	হীরা, ওপাল
শুভ উপরত্ন	জিরকন, সাদা পোথরাজ
অনুকূল ঈশ্বর	দেবী
শুভ ধাতু	রূপা
শুভ রঙ	সাদা
শুভ মন্ত্র	Om Shum Shukray Namah

6

আপনার সম্বন্ধে

আপনার সংখ্যা হচ্ছে ৬। এর অধিপতি হলেন শুক্র। ৬ সংখ্যাটির প্রভাবে কারণে আপনার একটি আকর্ষণীয় ব্যক্তিত্ব তৈরি হবে। আপনি খুব মিশুক হবেন ও বন্ধুপ্রবণ হবে। এর ফলে আপনি অন্যদের কাছে প্রিয়ভাজন হবেন। সৌন্দর্য্য ও সুন্দর জিনিসের উপর আপনার একটি স্বাভাবিক আকর্ষণ থাকবে। আপনি বিপরতি লিঙ্গের প্রতি অতি আকর্ষণ অনুভব করবেন। সুন্দর চেহারার মানুষের সাথে সম্পর্ক রাখা ও তাদের সাথে কথা বলার প্রবণতা আপনার মাঝে আছে। আপনি শিল্পকলায় আগ্রহী হবেন। একে আপনি পেশা হিসেবে নিতে পারেন। আপনি সঙ্গীত, সাহিত্য, শিল্পকলা, ভাষ্কর্যের প্রতি জানতে আগ্রহী। আপনি ভাল পোশাক ও বাড়ির আশা করেন। আপনি অতিথিপরায়ণতায় গর্ব অনুভব করেন। আপনি ঘরে বাইরে সব জায়গায় পরিষ্কার থাকতে ও নির্দিষ্ট পছন্দের আসবাবপত্র, পর্দা রাখতে স্বাভাবিকভাবেই পছন্দ করেন। স্বভাবগতভাবে আপনি একজন শক্ত মনের মানুষ। আপনি যার সাথে কথা বলছেন সে যাতে আপনার সাথে একমত হয় এটিই আপনার লক্ষ্য। নিজের মতে অটল থাকা ও ঈর্ষা করাটাও আপনার স্বভাবের মধ্যে পড়ে। আপনি নিজের কাজের ক্ষেত্রে প্রতিযোগিতা পছন্দ করেন না। এর ফলে আপনি মানসিক চাপ ও মনোকষ্টে ভুগতে পারেন। আপনি মানুষের মন জয় করতে পারদর্শী হবেন। এর ফলে আপনার অনেক বন্ধু হবে।

আপনার জন্য অনুকূল সময়

পাশ্চাত মতে রবি ২৫শে এপ্রিল থেকে ২৫শে মে অশ্বি বৃষরাশিতে এবং ২৪শে সেপ্টেম্বর থেকে ১৩ই অক্টোবর অশ্বি তুলারাশিতে থাকবে। ভারতীয় মতে এই দিনগুলি হচ্ছে ১৩ই মে থেকে ১৪ই জুন এবং ১৭ই অক্টোবর থেকে ১৩ই নভেম্বর অশ্বি। এই রাশি গুলি শুক্রের সাথে সম্পর্কিত এবং ১৪ই মার্চ থেকে ১২ই এপ্রিল অর্থাৎ মীনরাশিতে শুক্র উচ্চপদে থাকবে। তাই ৬ সংখ্যাধারী ব্যক্তির এই সময়ে কোন গুরুত্বপূর্ণ বা ভাল কাজের আরম্ভ করতে পারেন।

আপনি জন্য অনুকূল গায়ত্রী মন্ত্র

শুক্রের থেকে আরো বেশি উপকারিতা পেতে রোজ সকালে এই গায়ত্রী মন্ত্রটি ১১, ২১ বা ১০৮ বার করে জপ করুন।। ওম ভৃগুজয় বিদমহে দিব্যদেহায় ধীমহি তন্নো শুক্রঃ প্রচোদ্যাৎ।।

কালসর্প দোষ



যদি রাহু আর কেতুর মাঝখানে সপ্তগ্রহ অবস্থান করে তবে কালসর্প যোগের সৃষ্টি হয়। কালসর্প যোগ দুই ধরনের হয়ে থাকে- আরোহণকারী ও অবরোহণকারী। রাহু সকল সপ্তগ্রহকে গ্রাস করলে আরোহণকারী কালসর্প যোগের সৃষ্টি হয়। সকল সপ্তগ্রহ রাহুর পিছনে অবস্থান করলে অবরোহণকারী কালসর্প যোগের সৃষ্টি হয়।

কোষ্ঠীর ২২টি ঘরে রাহুর অবস্থান অনুযায়ী বারো ধরনের কালসর্প যোগ দেখা যায়:

অনন্ত

কুলিক

বাসুকি

শঙ্খপাল

পদ্মা

মহাপদ্মা

তক্ষক

কর্কোট

শঙ্খচূড়

ঘাতক

বিষধর

শেষনাগ

আপনার রাশিফলে কালসর্প যোগের উপস্থিতি



কালসর্পের উপস্থিতি

আপনার কোষ্ঠীতে অবরোহণকারী কালসর্প দোষ দেখা যাচ্ছে যা খুব বেশি শক্তিশালী বলে গণ্য করা হয় না। আপনার কোষ্ঠীতে কালসর্প দোষের পূর্ণ প্রভাব আছে।

কালসর্প নাম



শঙ্খচূড়

অভিমুখ



FULL DESCENDING

কালসর্প দোষের বিবরণ

আপনার কোষ্ঠীতে শঙ্খচূড় কালসর্প যোগের উপস্থিতি আছে। এর ফলে জীবনে অনেক বাধার সম্মুখীন হবে এবং জাতকে সামনে এগিয়ে যেতে অনেক সংগ্রাম করতে হবে। যাই হোক পরবর্তীতে সকল বাধা দূর হয়ে যাবে। আপনার চাকরির ক্ষেত্রে বাধা থাকতে পারে। আপনার পদাবনতির কারণে সমস্যা দেখা দিতে পারে। আপনার সমাপ্তি এখনই হবে না। ব্যবসায় থাকলে ধারাবাহিক ব্যর্থতার শিকার হতে হবে। জাতকের বন্ধুরা তাকে বারংবার প্রতারণা করার চেষ্টা করে। পিতৃ বা মাতৃস্নেহ থেকে বঞ্চিত হতে পারে। মাতুল বা ভগ্নিপতির মাধ্যমে প্রতারণার শিকার হবে। কালসর্প যোগের কারণে জাতক অনেক অসুস্থ থাকতে পারে। এর কারণে অর্থনৈতিক ক্ষতি হবে এবং কষ্ট হলেও পরবর্তীতে অবস্থার উন্নতি হবে। কালসর্প যোগের কারণে জাতক প্রদেশে কষ্ট ভোগ করে এবং সরকারি কর্মচারীদের সাথে মনোমালিন্য হয়। আইনি শাস্তিও জাতক পেতে পারে। বৈবাহিক জীবন কষ্টকর ও বিপর্যস্ত থাকে। পারিবারিক জীবন বিঘ্নিত থেকে যায়; শান্তি ও সুখের অনুপস্থিতি দেখা যায়। নানা রকম ব্যবসায় হাত পাকাবার চেষ্টা করলেও সাফল্য আসে না। এর সামাজিক অবস্থান ও সম্মান স্বাভাবিক পর্যায়েই হয়ে থাকে।

কালসর্প দোষের প্রতিকার

- কালসর্প দোষ নিবারণ যন্ত্র ঘরে স্থাপনা করে তার নিয়মিত পূজা করতে হবে .
- ১০৮ বার শ্রী শ্রী হনুমান চালিশা পাঠ করতে হবে।
- রুদ্রাভিষেক - ভগবান শিবের রুদ্রাভিষেক অথবা পঞ্চোপচার পূজা উজ্জয়নে মহাকালেশ্বর মন্দিরে বা কাশী বিশ্বনাথ মন্দিরে বা কোন জ্যোতির্লিঙ্গ শিব মন্দিরে করতে হইবে
- শুভ মুহূর্তে স্রোতমান জলে কয়লা তিনবার প্রবাহিত করতে হবে।
- শিক্ষার্থীরা বিধি মেনে এক বৎসর অন্দি সরস্বতী মাতার বীজ মন্ত্র জপ করবেন .
- যতদিন অন্দি রাহু-কেতুর দশা ও অন্তর্দশা চলবে, ততদিন পর্যন্ত প্রত্যেক দিন ১১ মালা মহামৃত্যুঞ্জয় মন্ত্র জপ করতে হবে, এবং প্রত্যেক শনিবার গ্রহরাজ কে তৈল দিয়ে অভিষেক করাতে হবে আর প্রত্যেক মঙ্গলবার হনুমানজির পূজায় ছোলা চড়াতে হবে।
- শ্রাবন মাসে ৩০ দিন মহাদেব এর অভিষেক করতে হবে।
- এক বৎসর অন্দি 'গণপতি অথর্বশীর্ষ' এর পাঠ করতে হবে।
- মঙ্গলবার এবং শনিবার রামচরিতমানসের সুন্দরকাণ্ডের ১০৮ বার পাঠ শ্রদ্ধার সহিত করতে হবে।



মাস্তলিক দোষ কি?

মাস্তলিক দশা অর্থাৎ জন্মকুণ্ডলীতে মাস্তল গ্রহের একটি বিশেষ অবস্থান থাকলে জীবনে নানা বাধা ও প্রতিকূলতা আসে। জেনে নিন এই দশা কাটানোর উপায়।

মাস্তল দশা বা মাস্তলিক দশার কথা অল্প-বিস্তর জানেন সবাই। একে কুজ দশা, ভোম দশা বা অঙ্গরাখা দশাও বলা হয়। জন্মকুণ্ডলীর প্রথম, দ্বিতীয়, চতুর্থ, সপ্তম, অষ্টম ও দ্বাদশ স্থানের মধ্যে যে কোনও একটিতে যদি মাস্তল অবস্থান করে তবে সেই জাতক বা জাতিকাকে মাস্তলিক বলা হয়।

लग्ने व्यये सुखे वापि सममे वा अष्टमे कुजे ।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ॥

মাস্তলিক বিশ্লেষণ

মোট মাস্তলিক শতাংশ

18%

মাস্তলিক বিবরণ

আপনার কোষ্ঠীতে মাস্তলিক দোষ উপস্থিত আছে। যাই হোক এটির প্রভাব বেশ নগণ্য। মাস্তলিক দোষের কিছু প্রতিকার করলে এর থেকে রেহাই পাওয়া যাবে।



ঘরের উপর ভিত্তি করে

সূর্য আপনার কোষ্ঠীর প্রথম ঘরে অবস্থান করছে।



দিকের উপর ভিত্তি করে

এই শনি গ্রহটি আপনার কোষ্ঠীর অষ্টম ঘরটিকে চিহ্নিত করেন।

আপনার কোষ্ঠীর প্রথম ঘরটি এই শনি গ্রহ দ্বারা চিহ্নিত।

আপনার কোষ্ঠীর প্রথম ঘরটি এই রাহু গ্রহ দ্বারা চিহ্নিত।

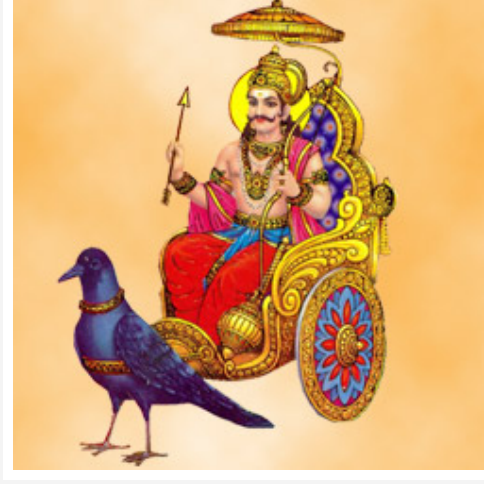
এই মঙ্গল গ্রহটি আপনার কোষ্ঠীর দ্বিতীয় ঘরটিকে চিহ্নিত করেন।

আপনার কোষ্ঠীর সপ্তম ঘরটি এই সূর্য গ্রহ দ্বারা চিহ্নিত।

আপনার কোষ্ঠীর সপ্তম ঘরটি এই কেতু গ্রহ দ্বারা চিহ্নিত।

মাস্তলিক দোষের প্রতিকার

- রূপোর চৌকো ডিম্বির মধ্যে মধু ভরে হনুমান মন্দিরে বা কোনো নির্জন বোনে রাখলে মঙ্গল দোষ শান্ত হয়।
- মঙ্গলবারে সুন্দরকাণ্ড এবং বালকাণ্ড পাঠ করলে উপকার হবে।
- বাঁদর বা কুকুর কে আটা এবং গুড়ের তৈরী মিষ্টি রুটি খাওয়াতে হবে।
- মঙ্গল চন্দ্রিকা স্তোত্র পাঠ করলেও উপকার পাওয়া যাবে।
- মাঁ মঙ্গলা গৌরীর আরাধনা করলেও মঙ্গল দোষ দূর হয়।
- কার্তিক পূজা করেও মঙ্গল দোষের দুশ্প্রভাব থেকে উপকার পাওয়া যেতে পারে।
- মঙ্গলবার করে বাতাসা এবং তিল ও গুড়ের নাড়ু স্রোতমান জলে প্রবাহিত করতে হবে।



সাড়েসাতি দোষ কি?

সাড়ে সাত বছর ধরে শনি তিন ধরনের রাশিতে ঘুরে বেড়ালে তাকে সাড়েসতি বলে। তিন রাশি হল: চন্দ্র রাশি, চন্দ্রের আগেরটি এবং আরকটি যেটি চন্দ্রের পরে বসে। জন্মের চন্দ্ররাশি থেকে শনি যখন বারোতম রাশিতে প্রবেশ করে তখন সাড়েসতি শুরু হয় এবং জন্মের চন্দ্ররাশি থেকে শনি দ্বিতীয় রাশিকে ত্যাগ করলে সাড়েসতি সমাপ্ত হয়। শনি একটি রাশি পরিক্রমণে আড়াই বছর সময় নেয় এবং একে শনির ধৈর্য বলে। একই ভাবে তিনটি রাশি পরিক্রমণে শনির সাড়ে সাত বছর লাগে এবং এই কারণে একে সাড়ে সতি বলা হয়। সাধারণত সারাজীবনে কোষ্ঠীতে সাড়েসতি তিন বার আসে- প্রথমবার শৈশবে, দ্বিতীয়বার যৌবনে এবং তৃতীয় বার বৃদ্ধাবস্থায়। প্রথম সাড়েসতি শিক্ষা ও অভিভাবকের ক্ষেত্রে প্রভাব ফেলে। দ্বিতীয় সাড়েসতি প্রভাব ফেলে

পেশা, অর্থ এবং পরিবারের উপর। শেষেরটি স্বাস্থ্যের ক্ষেত্রে সব থেকে বেশি প্রভাব ফেলে।

আপনার রাশিফলে সাড়েসাতির উপস্থিতি



আপনার রাশিফলে সাড়েসাতির উপস্থিতি নেই

না বর্তমানে আপনি সাড়েসতিতে নেই।

বিবেচনা তারিখ	23-4-2017
শনি রাশি	ধনু
চন্দ্র রাশি	কর্কট
শনি বক্রগতি ?	হ্যাঁ

রত্ন পরামর্শ

প্রাচীনকাল থেকে এটি বিশ্বাস করা হয় যে, ধাতু ও পাথর অলংকার হিসেবে ব্যবহারের পাশাপাশি এদের মধ্যে অনেক দৈবিক ও অতিপ্রাকৃতিক ক্ষমতা লুকিয়ে আছে যা রোগ প্রতিরোধ ও নিরাপত্তার কাজে সাহায্য করে। বৈদিক জ্যোতিষশাস্ত্র মতে গ্রহগুলো একধরনের উর্জা নিঃসৃত করে যা আমাদের কোষ্ঠীতে এদের অবস্থান অনুযায়ী আমাদের জীবনে ভাল বা মন্দ প্রভাব ফেলে। প্রত্যেক গ্রহের গুণাগুণ অনুযায়ী একেক একটি পাথর নির্ধারিত আছে যা এই গ্রহের গুণাগুণ ও উর্জা ধারণ করে। এই পাথরগুলি ভাল গুণ প্রতিফলিত করে ও মন্দ গুণ আত্মসাৎ করে। গ্রহ অনুযায়ী সঠিক পাথর ধারণ করলে পাথরটি ধারণকারীর প্রতি ভাল প্রভাব ফেলতে থাকে। এটি শুধুমাত্র ইতিবাচক ও ভাল প্রভাব ধারণকারীর শরীরে প্রতিফলিত করে

জীবন রত্ন



লাল প্রবাল

স্বাস্থ্য, আয়ু, খ্যাতি, মর্যাদা, জীবনের পথ ইত্যাদি শরীর ও অন্যান্য ব্যাপারে অধিপতি বা লগ্ন বেশ প্রভাব ফেলে। মোট কথা এটি সমগ্র জীবনের সার ধারণ করে। তাই যে পাথর লগ্নের অধিপতির সাথে যুক্ত তাকে জীবন পাথর বলে। কোন ব্যক্তি জীবনভর ভাল অভিজ্ঞতা ও এই পাথরের ভাল প্রভাব জীবনে কাজে লাগাতে ধারণ করতে পারে।

কারক রত্ন



হলুদ নীলকান্তমণি

কোষ্ঠীর পঞ্চম ঘর হচ্ছে আরেকটি ভাল ও শুভ ঘর। পঞ্চম ঘরটি মেধা, উচ্চ শিক্ষা, সন্তান, লাভ ইত্যাদি নির্দেশ করে। এটি পূর্ব জন্মের কর্মফল বা পুণ্যের জায়গা হিসেবেও বিবেচিত হয়। তাই এই ঘরটিকে একটি শুভ ঘর বলে বিবেচনা করা হয়। পঞ্চম ঘরের অধিপতির সাথে যুক্ত পাথরকে লাভদায়ক পাথর বলা হয়।

ভাগ্য রত্ন



মুক্তা

কোষ্ঠীর নবম ঘরটিকে ভাগ্যস্থান বলে বা ভাগ্য / লক্ষ্যের ঘরও বলা হয়ে থাকে। এই ঘরটি সম্পদ, সাফল্য, মেধা ও অর্জন, জ্ঞান ইত্যাদি নির্দেশ করে। পূর্বজন্মের পুণ্যের ফলে এই জন্মে কি কি সুবিধা ভোগ করবে সে সম্পর্কে এই ঘরে নির্দেশ থাকে। নবম ঘরের অধিপতির সাথে যুক্ত পাথরকে ভাগ্য পাথর বলে। এই পাথর ধারণ করলে ভাগ্য

জীবন রত্ন

জীবন রত্ন - লাল প্রবাল



বিকল্প Red Agate

আঙ্গুল তর্জনী

ধাতু 6 - 10.25 ক্যারট

দিন

মঙ্গলবার

দেবতা

মঙ্গল

তার ওজন

সোনা



বিবরণ

মঙ্গল গ্রহ লাল প্রবালকে প্রভাবিত করে। লাল প্রবাল ধারণে সাহস বাড়ে এবং শত্রু পরাজিত হয়। অশুভ প্রভাব, জাদুটোনা এবং খারাপ স্বপ্ন দেখা থেকে লাল প্রবাল রক্ষা করে।



ধারণ করার সময়

চান্দ্র মাসের অর্ধেক পেরিয়ে গেলে কোন এক মঙ্গলবার সূর্যোদয়ের এক ঘন্টা পরে ধারণ করতে হবে।



আঙ্গুল

মন্ত্র জপের পর আংটিটি ডান হাতের অনামিকা আঙুলে পরতে হবে।



ধাতু এবং তার ওজন

লাল প্রবাল ৬ ক্যারেটের বেশি ওজনের ধারণ করতে হয়। তামা মিশ্রিত সোনার আংটিতে এটি বসাতে হবে। আংটিটি এমনভাবে বানাতে হবে যাতে পাথরটি ত্বক স্পর্শ করে।



মন্ত্র

তেজস্বীকরণ ক্রিয়া সম্পন্ন হলে ফুল ও ধূপকাঠি দিয়ে প্রবালটি পূজা করা উচিত। প্রবালের জন্য নিম্নোক্ত মন্ত্রটি ১০৮ বার জপ করতে হবে।

ॐ ক্রাং ক্রীং ক্রীং সঃ ভীমায় নমঃ



বিকল্প

স্যাণ্ড মুঙ্গি, কারনেলিন ও লাল জ্যাসপার লাল প্রবালের বিকল্প হিসেবে ব্যবহার করা যেতে পারে।



সাবধানতা

পান্না, হীরে, নীল নীলকান্তমণি, গোমেদ এবং ক্যাটস আই ও এর বিকল্প সমূহকে লাল প্রবালের সাথে একসাথে ধারণ করা যাবে না।



প্রাণ প্রতিষ্ঠা

ধারণ করার আগে কিছু সময়ের জন্য কাঁচা দুধে বা গঙ্গার জলে ডুবিয়ে রাখতে হবে।

কারক রত্ন

কারক রত্ন - হলুদ নীলকান্তমণি



বিকল্প

পোখরাজ

আঙ্গুল

তর্জনী

ধাতু

4 - 5.25 ক্যারট

দিন

বৃহস্পতিবার

দেবতা

বৃহস্পতি

তার ওজন

সোনা



বিবরণ

হলুদ নীলকান্তমণি বৃহস্পতিগ্রহ দ্বারা প্রভাবিত। হলুদ নীলকান্তমণি ভাল স্বাস্থ্য, জ্ঞান, প্রগতি, দীর্ঘায়ু, নাম, সম্মান ও যশ এনে দেয়। হলুদ নীলকান্তমণি অশুভ প্রভাব থেকে রক্ষা করে।



ধারণ করার সময়

চান্দ্র মাসের অর্ধেক পেরিয়ে গেলে কোন এক বৃহস্পতিবার সকালে ধারণ করা উচিত।



আঙ্গুল

মন্ত্র জপের পর আংটিটি ডান হাতের অনামিকা আঙুলে পরতে হবে।



ধাতু এবং তার ওজন

হলুদ নীলকান্তমণি ৩ ক্যারেটের বেশি ওজনের ধারণ করা উচিত তবে তা ৬, ১১ বা ১৫ ক্যারেটের হলে চলবে না। এটি সোনার আংটিতে বসানো উচিত। আংটিটি এমনভাবে বানানো উচিত যেন ধাতুটি ত্বক স্পর্শ করে।



মন্ত্র

তেজস্বীকরণ ক্রিয়া সম্পন্ন হলে ফুল ও ধূপকাঠি দিয়ে নীলকান্তমণিটি পূজা করা উচিত। নীলকান্তমণির জন্য নিম্নোক্ত মন্ত্রটি ১০৮ বার জপ করতে হবে।

ॐ গ্রাং গ্রীং গ্রীং সঃ গুরুবে নমঃ



বিকল্প

হলুদ নীলকান্তমণির বিকল্প হিসেবে হলুদ মুক্তা, হলুদ গোমেদ, হলুদ টুর্ম্যালিন, পোখরাজ এবং পীত (কোয়াটজ/স্ফটিকাকৃতির পোখরাজ) ধারণ করা যেতে পারে।



সাবধানতা

হীরা, নীল রঙের নীলকান্তমণি, গোমেদ এবং ক্যাটস আই এর সাথে ধারণ করা উচিত নয়।



প্রাণ প্রতিষ্ঠা

ধারণ করার আগে কিছু সময়ের জন্য কাঁচা দুধে বা গঙ্গার জলে ডুবিয়ে রাখতে হবে।

ভাগ্য রত্ন

ভাগ্য রত্ন - মুক্তা



বিকল্প	Moon Stone
আঙ্গুল	অনামিকা বা কনিষ্ঠ
ধাতু	5 - 7.25 ক্যারট

দিন	সোমবার
দেবতা	চন্দ্র
তার ওজন	



বিবরণ

মুক্তা চন্দ্র দ্বারা প্রভাবিত। মুক্তা ধারণ করলে সম্পদ, যশ এবং জীবনীশক্তি বৃদ্ধি পায়। যিনি মুক্তা ধারণ করেন তার বুদ্ধিমত্তা ও দীর্ঘায়ু প্রাপ্তি হয়।



ধারণ করার সময়

চন্দ্র মাসের অর্ধেক পেরিয়ে গেলে কোন এক সোমবারের সকালে ধারণ করতে হবে।



আঙ্গুল

মন্ত্র জপের পর আংটিটি অনামিকা অর্থাৎ তিন নম্বর আঙুলে পরতে হবে।



ধাতু এবং তার ওজন

মুক্তা ২,৪,৬ বা ১১ ক্যারেট ওজনের ধারণ করা উচিত। এটি রূপোর আংটিতে বসানো উচিত। আংটিটি এমন ভাবে বানাতে হবে যাতে মুক্তোটি দ্বক স্পর্শ করে।



মন্ত্র

তেজস্বীকরণ ক্রিয়া সম্পন্ন হলে ফুল ও ধূপকাঠি দিয়ে মুক্তোটি পূজা করা উচিত। মুক্তোর জন্য নিম্নোক্ত মন্ত্রটি ১০৮ বার জপ করতে হবে।

ॐ শ্রী শ্রী শ্রী সঃ চন্দ্রায় নমঃ
।।



বিকল্প

চন্দ্র পাথর, শ্বেত নীলকান্তমণি মুক্তোর বিকল্প হিসেবে ব্যবহার করা যায়।



সাবধানতা

হীরা, নীল নীলকান্তমণি, পান্না, ক্যাটস আই এবং এর বিকল্প গুলোর সাথে ধারণ করা উচিত নয়।



প্রাণ প্রতিষ্ঠা

ধারণ করার আগে কিছু সময়ের জন্য কাঁচা দুধে বা গঙ্গার জলে ডুবিয়ে রাখতে হবে।



লগ্ন বিবরণ - বৃশ্চিক

স্বামী	মঙ্গল
প্রতীক	বৃশ্চিক
বৈশিষ্ট্য	পানীয়
শুভ রত্ন	স্থানান্তর যোগ্য
উপবাসের দিন	উত্তর

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् ।
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत् ॥

যাদের কোষ্ঠীতে বৃশ্চিকরাশি উদয় হয় তারা গোপনকারী, গভীর, বিচ্ছিন্ন, রহস্যময়, পুনর্জাত বা অধঃপতিত, সংবরণশীল, বোঝা কঠিন, সাহসী, ইচ্ছাশক্তিপূর্ণ, দৃঢ়, জেদি, সৃজনশীল, আত্মনির্ভর, আত্মনিয়ন্ত্রণশীল (সম্ভবত নিজের উদ্যম ছাড়া আর যেকোন ব্যাপারে) ও মৌন স্বভাবের হয়ে ওঠে। আধ্যাত্মিক জ্যোতিষী উজাবেল হিকির মতানুযায়ী, কোন প্রস্তুতিত আত্মার জন্ম বৃশ্চিকরাশির উদয় ছাড়া সম্ভব নয়।

এটি কর্ম শক্তির গর্ভস্থল। এটি সেই যুদ্ধক্ষেত্র যেখানে সকল পুণাত্মা আর পাপী আত্মা মরণশীল যুদ্ধে অংশগ্রহণ করতে আসে। তারা সমন্বয়ে থাকে। আত্মার পাপ অংশ অবশ্যই নিশ্চিহ্ন হবে। এইভাবে পুণাত্মার জন্য অর্থাৎ স্বয়ং ঈশ্বরের জন্য পথ তৈরি করে এর প্রতি আনুগত্য স্বীকার করে। শারীরিক, আবেগী, মানসিক ও আধ্যাত্মিক পর্যায় গুলো বিবর্তিত।

“ বাইরে থেকে আপনাকে শান্ত মনে হয়। তবে আপনি ভিতর থেকে একবারে আবেগী হয়ে উঠতে পারেন, ঠিক যেমনটি কথায় আছে ‘ফল্গুধারা- এমন এক নদী যা মাটির নিচে কুলকুল করে বয়ে চলে। আপনি বেশ মৌন প্রকৃতির। তবে সবসময় অন্যের চালচলন জানতে আগ্রহী, নিজেরটা কখনোই কাউকে বলেন না।

আপনি গোয়েন্দাগিরি করতে পছন্দ করেন। আপনার কাছে সবকিছু জানার খুব প্রয়োজন-সব কিছু কেন হয় ও কিভাবে হয়। আপনার অসীম দৃঢ়তা ও শক্তি আছে যা আপনার নিজেকে ও যেকোন বাধাবে পেরিয়ে যেতে যথেষ্ট। আপনার উচিত

বিরক্তিভাব, অধিকারবোধ এবং ঈর্ষাকে দমন করা। আপনার মাঝে মোহ, পূর্বধারণা, আগ্রহ ও/বা অপবিজ্ঞান, মৃত্যু, যৌনতা বা শুশ্রূষা চর্চার দক্ষতা থাকতে পারে।

আপনি অসুরও হতে পারেন বা দেবতা, ঈগল বা সঁটে থাকা বিছে/বৃশ্চিকও হতে পারেন। মঙ্গল ও ক্লটো আপনার রাশির অধিপতি তাই কোষ্ঠীতে এদের অবস্থান গুরুত্বপূর্ণ।



আধ্যাত্মিক পার্শ্বের শিক্ষা



ক্ষমা

ইতিবাচক বৈশিষ্ট্যগুলো



প্রভাবশালী

কাজে মনোযোগী

বুদ্ধিমান

কল্পনাপ্রবণ

নেতিবাচক বৈশিষ্ট্যগুলো



ঈর্ষাপরায়ণ

ক্ষমা করতে চায় না এমন

অনমনীয়

গোপনপ্রিয়

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.

astrologyAPI



Vedic Rishi does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your astrology websites or astro-matching apps and provides you with simple APIs to create awesome user interfaces for your users

Website : <https://www.vedicrishiastro.com>

Email : mail@vedicrishiastro.com

Mobile : +91 1212 1212 12

Ladline : +91- 221232 22